आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 1/मार्च 2022
Received: 05/02/2022; Published: 24/03/2022

मैं काशी हूँ

डॉ.संगीता श्रीवास्तव 'सहर'
फोन :8887942025

ऊँ नाद से गुंजित

अविमुक्त काशी

मुक्ति का द्वार

मैं काशी हूँ।

सनातन काल से अद्भुत

जीवन और मृत्यु

सत्य और असत्य

आदि से अनादि तक

निरंतर सृजनशील

मैं काशी हूँ।

तीनों लोक से न्यारी

आस्था,विश्वास की भूमि

त्रिशूल पर बसी

मैं काशी हूँ।

भगीरथ की तपस्या से अभिभूत

गंगा की अविरल

अमृत धारा से सिंचित

मैं काशी हूँ।

मेरे अंतस में विराजते

विश्वेवर-पार्वती

अन्नपूर्णा, महालक्ष्मी

संग गजानन रिद्धि सिद्धि

देते ज्ञान की समृद्धि

मैं काशी हूँ।

तुलसी, कबीर की गूँजे वाणी

अंग सरस्वती वीणा वादिनी

साहित्य, कला, संस्कृति

की अनुपम अनुभूति

मैं काशी हूँ।।

प्रेमचंद, हरिश्चंद्र, भारतेन्दु

गिरिजा,बिस्मिल्ला, शास्त्री की

मैं काशी हूँ।।

प्रस्फुटित मेरे रोम-रोम से

राग-रागिनी, यंत्र-मंत्र

जिसे देख सब

होते अभिमंत्रित

मैं काशी हूँ।

समाहित हैं मुझमें

अंतरिक्ष,लोक,परलोक

मैं काशी हूँ ।।।

****